ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 195-197**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिला के संदर्भ में)

डॉ0 गीतांजलि

सहायक प्राध्यापक–समाजशास्त्र विभाग, डॉ० जगन्नाथ मिश्रा महाविद्यालय, (बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर) मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-17.09.2024, Revised-24.09.2024, Accepted-30.09.2024 **E-mail : aman.rony@rediffmail.com**

सारांशः वैश्वीकरण आज के समय की महती आवश्यकता है। आज संचार तकनीकी के विकास के कारण विश्व के समस्त देश एक सूत्र में बंध गये है और दुनिया सिमटकर ग्लोबल विलेज का रूप ले चुकी है। ऐसे में वैश्वीकरण की प्रक्रिया से खुद को दूर करना किसी भी राष्ट्र के लिए घातक है। आज हमारे सामने जो वैश्विक मुद्दें और समस्याओं है उन पर विश्व के सभी राष्ट्र के लिए घातक है। आज हमारे सामने जो वैश्वीक मुद्दे और समस्यायें है। उन पर विश्व के सभी राष्ट्रों के सहयोग से राष्ट्रीयता की संकीर्ण विचार धारा से उपर उठकर विचार किया जाना जरूरी है। वैश्वीकरण ने सारे विश्व को सशक्त अर्थव्यवस्था के निर्माण करने का एक सुनहरा अवसर उपलब्ध कराया है। हमें इसका लाभ अवश्य उठाना चाहिए। यह समय किनारे–किनारे चलने का नहीं है। राष्ट्रीयता की संकीर्ण विचारधारा से उपर उठकर अर्न्तराष्ट्रीय सहयोग और सौहार्द्र की भावना को बढ़ाने का है। आज आवश्यकता है कि विकसित व विकासशील देश एक दूसरे की महता को समझे और आपसी सौहार्द द्वारा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करे।

कुंजीभूत शब्द– वैश्वीकरण, संचार तकनीकी, ग्लोबल विलेज, सशक्त अर्थव्यवस्था, नारी, स्वतंत्र और जागरूक, आधुनिकीकरण

आज की नारी अधिक स्वतंत्र और जागरूक हैं। शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण परिवार के अन्दर उसके निर्णयों को महत्व दिया जाने लगा है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि महिलाएं अब धीरे–धीरे पितृसता के आवरण से बाहर आ रही है। इसका महत्वपूर्ण श्रेय हम वैश्वीकरण दे सकते हैं। इस वैश्विक अभियान का पहलू यह भी है कि जैस–जैसे आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण तथा औद्योगीकरण का प्रयास हो रहा है। वैसे–वैसे महिलाओं के लिए अस्मिता की रक्षा करना कठिन होता जा रहा है एवं कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न और छेड़–छाड़ की घटनाएं सामान्य हो गई है। उच्च पदस्थ महिलाएं अधिकारी हो या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को कमप्यूटर एवं सूचना तकनीकी विकास के कारण इण्टरनेट के जरिये अश्लील साईटें व चैटिंग के बढ़ते प्रचलन में महिला साइबर क्राइम अपराध को जन्म दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पादों की बिक्री के लिए नारी शरीर का नग्न प्रदर्शन कर रही है। निःसन्देह जहां वैश्वीकरण ने नारी मुक्ति को गति प्रदान की है और उपभोक्तवादी संस्कृति ने नारी को बन्धनों से मुक्त किया है, वहीं वैश्वीकरण ने नारी से नारीपन छीन लिया है और स्थानीयता की संस्कृति का विनाश किया है। आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री को उचित मार्ग दर्शन द्वारा चारित्रिक पतन से रोका जाय तथा कानूनों में पारदर्शिता एवं कठोरता से लागू कर घर, ऑफिस व सार्वजनिक स्थलों पर होने वाली हिंसा व उत्पीड़न को रोकने का सार्थक प्रयास किया जाय, जिससे इस वैश्विक युग में महिलाओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

भारत में वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सभी क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक में समानता पर आधारित थी। वेदों की रचना में लगभग 200 श्लोकों का योगदान स्त्रियों को माना गया है। राजनैतिक क्रियाकलापों में भी स्त्रियों की सहभागिता का उल्लेख मिलता है। ये ज्ञान एवं समृद्धि की देवी मानी जाती है। आज इस आधुनिक दौर में महिलायें अपने अधिकार के प्रति सचेत है। आज महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कर रही है। सामाजिक दृष्टि से यदि उन्हें कहा जाये तो वे उंचाई की बुलंदियों को छू रही है। आज विवाह जो एक धार्मिक संस्कार कहे जाने वाला सिर्फ एक उत्सव सा बनकर रह गया है। वैश्वीकरण ने तो परिवार की संरचना में भी परिवर्तन कर डाला है। अब ये संयुक्त के जगह पर एकल परिवार का स्थान हो गया है। वैश्वीकरण ने तो नातेदारी प्रथा को भी प्रभावित किया है।

आज हम भले ही समाज में महिला पुरुष समान अधिकारों की बातें कर रहे है तथा लैंगिक भेदभाव न होने की दलीलें दे रहे है किन्तु वास्तविक स्थिति कुछ और ही कहती है। हमारे यहाँ पर लड़की ने जन्म लिया लोग दुःख प्रकट करते है। वहीं लड़के जन्म पर खुशियाँ बांटते है। आज हम इस भेदभाव समाज में आये दिन प्रसव द्वारा बनायी गयी गैर कानूनी तरीका लोग बेहिचक अपनाकर कन्याभ्रूण हत्या करते है। मध्यम वर्ग समाज में तो लड़की के जन्म से ही उसके लियेधन को इकट्ठा कर उसके विवाह को श्रेष्ठ माना जाता न कि उसकी शिक्षा को। भारतीय समाज में महिलायें जो अविवाहित है तो चरित्र का लांछन लगाया जाता है। महिलायें यदि पति से दूर रहकर अलग शहर में नौकरी करती है तो उनके उपर शंका किया जाता है। इस वैश्वीकरण के दौर में आये संस्थाओं के बाहर कार्यरत महिला श्रमिकों के यौन उत्पीड़न की घटनायें भी लगातार बढ़ी रही है। बलात्कार की शिकार महिलाओं की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। भारत में देश के स्वतंत्रता के बाद महिला कल्याण के लिये तथा उन्हें सशक्त बनाने के तमाम राय एवं चर्चायें होने के बाद भी आये दिन ट्रेनों, कार्यालयों, संस्थाओं में महिलाओं के साथ यातनायें होती रहती है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप आज की नारी अधिक स्वतंत्र और जागरूक हैं। शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण परिवार के अन्दर उसके निर्णयों को महत्व दिया जाने लगा है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि महिलाएं अब धीरे–धीरे पितृसता के आवरण से बाहर आ रही है। इस वैश्विक अभियान का पहलू यह भी है कि जैस–जैसे आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण तथा औद्योगीकरण का प्रयास हो रहा है। वैसे–वैसे महिलाओं के लिए अस्मिता की रक्षा करना कठिन होता जा रहा है एवं कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न और छेड़–छाड़ की घटनाएं सामान्य हो गई है। उच्च पदस्थ महिलाएं अधिकारी हो या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को कमप्यूटर एवं सूचना तकनीकी विकास के कारण इण्टरनेट के जरिये अश्लील साईटें व चैटिंग के बढ़ते प्रचलन में महिला साइबर क्राइम अपराध को जन्म दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पादों की बिक्री के लिए नारी शरीर का नग्न प्रदर्शन कर रही है। निःसन्देह जहाँ वैश्वीकरण ने

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

नारी मुक्ति को गति प्रदान की है और उपभोक्तवादी संस्कृति ने नारी को बन्धनों से मुक्त किया है, वहीं वैश्वीकरण ने नारी से नारीपन छीन लिया है और स्थानीयता की संस्कृति का विनाश किया है।

आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री को उचित मार्ग दर्शन द्वारा चारित्रिक पतन से रोका जाय तथा कानूनों में पारदर्शिता एवं कठोरता से लागू कर घर, ऑफिस व सार्वजनिक स्थलों पर होने वाली हिंसा व उत्पीड़न को रोकने का सार्थक प्रयास किया जाय, जिससे इस वैश्विक युग में महिलाओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

अध्ययन का उद्देश्यः वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की स्थिति में तीव्रगति से विकास हुआ है। एक तरफ जहाँ महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा है तथा रोजगार के क्षेत्र में वे शामिल हुई हैं तो दूसरी तरफ कई नकारात्मक भाव भी उनके प्रति उत्पन्न हुए हैं। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है कि महिलाओं की स्थिति पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन पद्धतिः प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला के शहरी क्षेत्र का चयन किया गया है तथा अध्ययन क्षेत्र से 100 उत्तरदाताओं (महिलाओं) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है और साक्षात्कार प्रविधि द्वारा अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

तथ्य विश्लेषणः अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है–

तालिका संख्या–1

क्या आपको लगता है कि वैश्वीकरण ने महिलाओं के हरेक पक्ष यथा– शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा रोजगार के क्षेत्र में सहभागिता के अवसर को प्रभावित किया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	86	86
नहीं	14	14
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि वैश्वीकरण ने महिलाओं के हरेक पक्ष यथा–शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा रोजगार के क्षेत्र में सहभागिता के अवसर को प्रभावित किया है तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जबाव अपने असहमति में दिया है।

तालिका संख्या–2

क्या आपको लगता है कि आज महिलाओं के लिए निजीकरण के क्षेत्र में अवसर अधिक उपलब्ध हुए हैं ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	78	78
नहीं	22	22
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि आज महिलाओं के लिए निजीकरण के क्षेत्र में अवसर अधिक उपलब्ध हुए हैं तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने समर्थन में जबाव दिया है जबकि 22% उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया हैं।

तालिका संख्या–3

क्या आप इस बात के समर्थन में हैं कि महिलाओं को धारावाहिक/ टेलीविजन/सोशल मीडिया ने अधिक वैश्विक बनाकर उनकी स्थिति को प्रभावित किया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	84	84
नहीं	16	16
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप इस बात के समर्थन में हैं कि महिलाओं को धारावाहिक/ टेलीविजन/सोशल मीडिया ने अधिक वैश्विक बनाकर उनकी स्थिति को प्रभावित किया है तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें जानकारी नहीं हैं।

तालिका संख्या–4

क्या आपको वैश्वीकरण के फलस्वरूप परिवार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं यथा विवाह, जाति व्यवस्था, सामाजिक मूल्य भी प्रभावित हुई हैं ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	84	84
नहीं	16	16
कुल संख्या	**100**	**100**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या क्या आपको वैश्वीकरण के फलस्वरूप परिवार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं यथा विवाह, जाति व्यवस्था, सामाजिक मूल्य भी प्रभावित हुई हैं तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 5

क्या आपको लगता है कि वैश्वीकरण ने महिलाओं को वैश्विक शिक्षा/ पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति से परिचय कराया है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	100	100
नहीं	00	00
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या क्या आपको लगता है कि वैश्वीकरण ने महिलाओं को वैश्विक शिक्षा/पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति से परिचय कराया है तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है।

इस प्रकार भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण के प्रभाव को देखने पर लगता है कि अन्य देशों की तरह भारत में भारतीय जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और धार्मिक पर परोक्ष रूप से इसका प्रभाव पड़ा है। इस प्रक्रिया ने भारत के व्यापार, प्रौद्योगिकी, विज्ञान, शिक्षा, मीडिया, संरचना, परिवार, नृत्य, सिनेमा, फैशन तथा अन्य सभी चीजों को प्रभावित किया है। इसने राजनैतिक विचारधारा एवं प्रजातंत्र को बढ़ावा देने के साथ–साथ धर्मनिरपेक्षता और बाजार अर्थ को भी बढ़ावा दिया है। फादर्स डे, मदर्स डे व वैलेन्टाइन डे जैसे नए त्योहार के आगमन का कुछ ने भारत में स्वागत किया तो कुछ ने जमकर विरोध की। कुछ मानते हैं कि बाहरी प्रभाव से पारिवारिक समस्याएँ बढ़ी है। खासकर लिंग भेद व पीढ़ी संघर्ष। यह रोचक विषय है कि अमेरिका में जन्में और पले–बढ़े भारतीय युवा, भारत में रहने वाले युवाओं की सांस्कृतिक उन्नति देखकर पछतावा करते हैं। यहाँ की संस्कृति ने यदि अमेरिका के कुछ भारतीयों पर छाप डाली है परन्तु भारत के युवाओं पर पश्चिमीकरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है जिसका कारण वैश्वीकरण है। इन सभी प्रभावों से भारतीय महिलाएँ भी पीछे नहीं हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का, भारत की महिलाओं के सामाजिक जीवन पर इतना ही प्रभाव उचित रूप से पड़ा है कि महिलायें आज शिक्षित होने पर वे अपने परिवार के सामने बाल विवाह, दहेज प्रथा, सम्पति के अधिकार, तमाम अधिकारों के लिये महिलायें आगे आ रही है लेकिन वहीं दूसरी तरफ समाज में महिलाओं के साथ यौन हिंसा, दहेज उत्पीड़न जैसी सामाजिक बुराइयों को समाज में जो बड़े पैमाने पर खड़ा किया है इनको हम कैसे हटायें, यह बहुत बड़ा प्रश्न समाज के सामने है।

इन सबसे हम तभी उबरेंगे जब महिलायें जागरूक होंगी और साथ ही हम अपनी सोंच को बदले और आत्मविश्वास के साथ सफलता की आशा को साथ लेकर इस लड़ाई में सम्मिलित होंगे। तभी हम समाज से वैश्वीकरण को नई दिशा दे पायंगे और अपने सभ्यता, संस्कृति तथा अपने परिवार को सही ढंग से चला पायेंगे, साथ ही आधुनिकता में सामंजस्य बना सकेंगे, यदि महिलाओं की वर्तमान अवस्था को समझने का प्रयास किया जाय तो इसके लिये महिलाओं की वैश्विक प्रयासों का अध्ययन आवश्यक है। जिसके उदाहरण विश्व के अनेक देशों में मिलते है। जहां महिलाओं ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण हजारों वर्षों से अपनी दबी हुई आकांक्षाओं को फलीभूत करने के लिए संघर्ष और आन्दोलनों का सहारा लिया वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाय तो महिला आन्दोलनों का सूत्रपात सामान्यतया इंग्लैण्ड अमेरिका और फ्रांस जैसी राष्ट्रों में हुआ है।

वैश्वीकरण में महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए अपनी अन्तर्निहित क्षमता के बल पर आत्मविश्वास और साहस के साथ पुरुष प्रधान समाज में अपने अस्तितव को दिलाने का सफल प्रयास कर रही है, साथ ही बदलती सामाजिक परिस्थितियों के क्रम में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए कुछ न कुछ प्रयास स्तर पर किया रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुबे, अभय कुमार; भारत का भूमंडलीकरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण – 2008.
2. पाण्डेय, रवि प्रकाश; वैश्वीकरण एवं समाज, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, वर्ष 2012.
3. भार्गव, नरेश; वैश्वीकरण : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, नरेश भार्गव, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2014.
4. सिन्हा, सच्चिदानन्द; वैश्वीकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
5. श्रीवास्तव, राजीव; वैश्वीकरण और समाज, वैभव लक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष 2012.
6. Bagachi A; Globalization Liberalization and Velnerability India and Third would Economy and Political Weekly (45) 3219-30.
7. Fridman, Thomas : Globalization, The Lexus and the Olive Tree New York, Farrar Straus Giroux, 1999.

*****